सत्यमेव जयते

# प्रशिक्षण से परिवर्तन

## An out of Box Training Intervention
## A Case Study

**प्रशिक्षणार्थ प्रवेश**
**14 अक्टूबर 2013**

**सेवार्थ प्रस्थान**
**13 जनवरी, 2014**

**वन रक्षक आधारभूत**
**प्रशिक्षण प्रतिवेदन : 2013–14**

## अति. प्रधान मुख्य वन संरक्षक
## (प्रशिक्षण एवं अनुसंधान)

**राजस्थान, जयपुर**

श्री राहुल कुमार प्रधान मुख्य वन संरक्षक (होफ), राजस्थान जयपुर,
प्रशिक्षण केन्द्र उदयपुर में प्रमाण–पत्र देते हुए।

श्री पी. के. मेरकप, अति. प्रधान मुख्य वन संरक्षक (प्रशि. एवं अनुसंधान) राजस्थान जयपुर
प्रशिक्षण केन्द्र अलवर में प्रमाण–पत्र देते हुए।

Training with a Human Face

**पी. के. मेरकप**
आई.एफ.एस.

अति. प्रधान मुख्य वन संरक्षक
(प्रशिक्षण एवं अनुसंधान)
वानिकी प्रशिक्षण संस्थान,
जवाहरलाल नेहरू मार्ग, जयपुर
टेली नं. 0141-2710034

# àmŠH$WZ

कई वर्षों के बाद वन विभाग में प्रभावी वन सुरक्षा एवं विकास को दृष्टिगत रखते हुए वर्ष 2010 में 1101 वनरक्षकों की सीधी भर्ती की गयी थी। तद्पश्चात् वर्ष 2013 में कुल 746 वनरक्षकों (545 पुरुष व 201 महिला) की भर्ती हुई। यद्यपि अधिकांश वनरक्षक उच्च शैक्षणिक पृष्ठ भूमि के थे परन्तु शैक्षणिक शिक्षा एवं आधारभूत प्रशिक्षण में काफी अन्तर होने के कारण प्रतिभाशाली होते हुए भी वनकर्मी केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा लागू वन नियमों एवं वानिकी विकास गतिविधियों को क्रियान्वित करने में व्यावहारिकरूप से सक्षम नहीं होते। वनकर्मी प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरान्त वर्तमान परिपेक्ष्य में विभाग के उद्देश्यों को विधिवत एवं प्रभावी ढंग से पूर्ण करने में सफल होंगे। उक्त वनरक्षकों को आधारभूत प्रशिक्षण देने में विभाग के स्थाई प्रशिक्षण केन्द्रों को अपने सीमित संसाधनों से काफी समय लग जाता। अत: प्रधान मुख्य वन संरक्षक राजस्थान के स्तर पर सभी प्रशिक्षणार्थियों को एक साथ दिनांक 14.10.2013 से 13.1.2014 तक प्रशिक्षण देने का निर्णय हुआ।

इस निर्णय के तहत राज्य के दो स्थाई प्रशिक्षण केन्द्रों - अलवर, जोधपुर के अतिरिक्त 11 सैटेलाइट प्रशिक्षण केन्द्र - अजमेर, सीकर, सरिस्का (अलवर), भरतपुर, बूंदी, बांसवाड़ा, कोटा, बीकानेर, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, रणथम्भौर (सवाईमाधोपुर) बनाए गए। वनरक्षकों को आधारभूत प्रशिक्षण देने से पूर्व सत्र निदेशकों, सहायक सत्र निदेशकों व फैकल्टी हेतु ''प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण'' (टीओटी) विषय पर कार्यशाला आयोजित की गयी। स्थाई प्रशिक्षण केन्द्र अलवर, जोधपुर तथा सैटेलाइट प्रशिक्षण केन्द्र उदयपुर में कुल 132 महिला एवं शेष सैटेलाइट प्रशिक्षण केन्द्रों पर कुल 497 पुरुष वनरक्षकों को प्रशिक्षित किया गया। सभी प्रशिक्षण केन्द्रों पर समान पाठ्यक्रम तथा समान दिनचर्या लागू की गयी। प्रशिक्षणार्थियों को विषय पाठ्यक्रम के अतिरिक्त शस्त्र प्रशिक्षण, लाठी चलाने, जूडो कराटे आदि तथा उनके शारीरिक विकास के लिए योग, व्यायाम व खेलकूद का प्रशिक्षण दिया गया। **इन समस्त गतिविधियों का स्वयं मेरे स्तर पर निरन्तर सघन प्रबोधन किया गया। प्रशिक्षणोपरान्त वनरक्षकों के व्यक्तित्व, शारीरिक, मानसिक एवं अनुशासनिक गुणों में सकारात्मक विकास हुआ है। इस प्रकार आधारभूत प्रशिक्षण से प्रशिक्षणार्थियों का सर्वांगीण विकास ''प्रशिक्षण से परिवर्तन'' को स्पष्ट इंगित करता है।**

दिनांक 13.1.2014 को दीक्षांत समारोह के दौरान सैटेलाइट प्रशिक्षण केन्द्र उदयपुर में श्री राहुल कुमार, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (होफ) राजस्थान, वन प्रशिक्षण केन्द्र अलवर में अधोहस्ताक्षरकर्ता द्वारा तथा इसके अतिरिक्त शेष सभी केन्द्रों पर मुख्य वन संरक्षक स्तर के अधिकारियों द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण पूर्ण करने पर प्रमाण पत्र वितरित कर सम्बोधित किया गया जो वनकर्मियों के लिए उत्साहवर्धन व प्रेरणा का स्रोत रहा है। सभी प्रशिक्षण केन्द्रों पर प्रशिक्षण कार्य निर्विघ्न सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

**मैं अतिरिक्त मुख्य सचिव (वन) ओ.पी. मीणा, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (होफ) राजस्थान, राहुल कुमार व प्रधान मुख्य वन संरक्षक (टी.आर.ई.ई.) डॉ. सविता आनन्द का सदैव आभारी रहूंगा जिन्होंने हमें समय-समय पर इस कार्यक्रम के संचालन हेतु अमूल्य मार्गदर्शन प्रदान किया। इस प्रशिक्षण कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न करवाने में सभी सत्र निदेशकों, सहायक सत्र निदेशकों व प्रशिक्षकों ने सराहनीय कार्य किया। मुख्यालय स्तर के अधिकारियों व कर्मचारियों का सहयोग भी प्रशंसनीय रहा।**

इस प्रतिवेदन को तैयार करने में उप वन संरक्षक, शिवचरण गुप्ता, सहायक वन संरक्षक कन्हैयालाल शर्मा, सुशील कुमार सैनी, वनपाल राजेश कुमार शर्मा, कार्यालय सहायक जयशंकर आचार्य एवं अन्य स्टॉफ ने पर्याप्त सहयोग किया। एतदर्थ वे सभी साधुवाद के पात्र हैं।

प्रतिवेदन हेतु छायाचित्र उपलब्ध कराने में हरिणी वी. उ.व.सं. उदयपुर, मनोज पाराशर उ.व.सं. सरिस्का, आर.सी. सैनी उ.व.सं. प्रशिक्षण, अलवर, पदम सिंह राठौड़, उ.व.सं. प्रशि. जोधपुर, आर.के. हुडा, उ.व.सं. सीकर, टी. मोहन राज उ.व.सं. चित्तौड़गढ़, डी.आर. सहारण उ.व.सं. बीकानेर एवं ए.एस. गोठवाल, उ.व.सं. बांसवाड़ा ने सराहनीय कार्य किया। उनके प्रयासों से ही इस प्रतिवेदन का कलेवर निखर पाया। मैं उनकी सराहना करता हूं।

**सहायक वन संरक्षक कन्हैयालाल शर्मा, सुशील कुमार सैनी, वनपाल राजेश कुमार शर्मा ने इस प्रतिवेदन को तैयार करने हेतु तथ्य एवं छायाचित्र संकलन, डिजायन करने, आलेख लिखने व मुद्रित करवाने का कार्य किया एतदर्थ मैं उनके प्रयासों की विशेष रूप से सराहना करता हूँ।**

मैं समझता हूँ कि यह प्रतिवेदन प्रशिक्षण व्यवस्था को समग्र रूप से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर सकेगा।

**(पी. के. मेरकप)**

दीक्षान्त समारोह अलवर में प्रशिक्षाणर्थीयों को सम्बोधित करते हुए,
श्री पी. के. मेरकप, अति. प्रधान मुख्य वन संरक्षक, प्रशि. एवं अनु. राजस्थान जयपुर

शैक्षणिक भ्रमण हेतु प्रशिक्षणार्थियों को रवाना करते हुए डॉ. टी.मोहनराज उपवन संरक्षक, चित्तौडगढ

# dZ ajH$ à{ejU H$m`H«$_

## df 2013

लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा के विकास के साथ समाज में राज्य की भूमिका में भी तीव्र गति में वृद्धि हुई है। इसी कारण एक सुदृढ़ एवं प्रशिक्षित कार्मिक व्यवस्था किसी भी संगठन के लिए अत्यन्त आवश्यक है। कोई संगठन तभी कार्य कर सकता है जब उसमें कार्यरत कार्मिकों में काम करने की क्षमता हो और वह काम करके आत्म संतोष का अनुभव करता है।

इसी कारण कार्मिकों की भर्ती के बाद उनके प्रशिक्षण का महत्त्व बढ़ जाता है। प्रशिक्षण मानवीय क्षमता को बढ़ाने तथा कार्मिक कुशलता में अभिवृद्धि का महत्त्वपूर्ण साधन है। प्रशिक्षण लोक सेवक को उसकी मानसिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक क्षमताओं को बढ़ाने में मदद करता है। प्रशिक्षण का उद्देश्य लोक सेवक में अपेक्षित कार्य कौशल विकसित करना, उसकी कार्य क्षमता में वृद्धि करना, उसमें अपने कार्य के प्रति रुझान विकसित करना और उसमें एक व्यक्ति की अपेक्षा संगठनात्मक व्यक्तित्व विकसित करना है।

वन जैसे विभाग में तो प्रशिक्षण का महत्त्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि वन कार्मिकों विशेषकर अधीनस्थ कार्मिकों को एकाकीपन (Isolation) में कार्य करना होता है। जहाँ उन्हें विभागीय गतिविधियों को क्रियान्वित करने के साथ–साथ वन अपराधों से जूझने, निर्णय करने व नेतृत्त्व करने जैसे कार्य भी करने होते हैं।

## वन रक्षकों का प्रशिक्षण (वर्ष 2013)

राज्य में माह फरवरी, 2013 में कुल 764 वनरक्षक के पदों पर विभाग में नियुक्ति की गयी। उनमें से 545 पुरुष एवं 201 महिलाओं को वनरक्षक के पदों पर नियुक्ति प्रदान की गई। नवनियुक्त वनरक्षकों को उचित एवं पर्याप्त प्रशिक्षण दिये जाने के बाद ही कर्तव्य पर भेजने की मंशा अनुरूप सभी वनरक्षकों को एक साथ प्रशिक्षण दिये जाने की अनुपालना में प्र.मु.व.सं. राजस्थान (HoFF) के आदेश क्रमांक एफ15(1) 2013/कार्मिक भर्ती/प्रमुवसं/ 13880–92 दिनांक 17.9.2013 द्वारा दो स्थाई प्रशिक्षण केन्द्रों अलवर एवं जोधपुर के अतिरिक्त 11 सैटेलाइट प्रशिक्षण केन्द्रों – रणथम्भौर (स.मा.), कोटा, बूंदी, अजमेर, बांसवाड़ा, चित्तौड़गढ़, भरतपुर, उदयपुर, सीकर, बीकानेर, सरिस्का (अलवर) की अस्थाई व्यवस्था कर मुख्य वन संरक्षक प्रशि. एवं अनु. राज. जयपुर को इन्हें प्रशिक्षण देने का दायित्व सौंपा गया। इन प्रशिक्षणार्थियों को प्रधान मुख्य वन संरक्षक, राजस्थान के आदेश क्रमांक एफ. 5 (1) प्रशिक्षण/वस/98–99/1494 दिनांक 13.7.1998 द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार प्रशिक्षण दिया गया।

## प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण

नव नियुक्त वन रक्षकों को प्रशिक्षण दिए जाने से पूर्व वा.प्र.सं., जयपुर में 7 अक्टूबर 2013 को प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण (TOT) कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में उन सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को आमंत्रित किया गया जो किसी न किसी रूप में प्रशिक्षण गतिविधियों से सम्बद्ध थे। ऐसे अधिकारियों को प्रशिक्षण आयोजन की मूलभूत जानकारी व इसके सफल आयोजन के लिए सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक ज्ञान, मुख्य वन संरक्षक (प्रशिक्षण एवं अनुसंधान) के द्वारा प्रदान किया गया।

## प्रशिक्षण केन्द्रो का विवरण

| क्र.सं. | प्रशिक्षण केन्द्र का नाम | आवंटित प्रशिक्षणार्थियों की संख्या | | उपस्थिति देने वाले प्रशिक्षणार्थी | | प्रशिक्षण पूर्ण करने वाले प्रशिक्षणार्थी | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | पुरुष | महिला | पुरुष | महिला | पुरुष | महिला |
| 1. | सैटेलाइट केन्द्र अजमेर | 54 | – | 40 | – | 40 | – |
| 2. | सैटेलाइट केन्द्र भरतपुर | 52 | – | 62 | – | 59 | – |
| 3. | सैटेलाइट केन्द्र सीकर | 56 | – | 50 | – | 50 | – |
| 4. | सैटेलाइट केन्द्र सरिस्का अलवर | 55 | – | 56 | – | 54 | – |
| 5. | सैटेलाइट केन्द्र रणथम्भौर स.मा. | 53 | – | 50 | – | 50 | – |
| 6. | सैटेलाइट केन्द्र बूंदी | 54 | – | 47 | – | 46 | – |
| 7. | सैटेलाइट केन्द्र कोटा | 53 | – | 44 | – | 44 | |
| 8. | सैटेलाइट केन्द्र बांसवाड़ा | 56 | – | 48 | – | 48 | – |
| 9. | सैटेलाइट केन्द्र चित्तौड़गढ़ | 55 | – | 55 | – | 55 | |
| 10. | सैटेलाइट केन्द्र बीकानेर | 57 | – | 55 | – | 51 | – |
| 11. | सैटेलाइट केन्द्र उदयपुर | – | 47 | – | 47 | – | 41 |
| 12. | स्थाई केन्द्र अलवर | – | 54 | – | 47 | – | 44 |
| 13. | स्थाई केन्द्र जोधपुर | – | 52 | – | 47 | – | 47 |
| | **योग** | **545** | **153** | **507** | **141** | **497** | **132** |
| | **कुल योग** | **698** | | **648** | | **629** | |

इस प्रकार नवनियुक्त वन रक्षकों में से उपर्युक्त केन्द्रो पर 698 प्रशिक्षणार्थियों के आवंटन के विरुद्ध कुल 648 प्रशिक्षणार्थी उपस्थित हुए परन्तु विभिन्न कारणों यथा अन्य सेवा में जाने, अस्वस्थ होने, प्रसूति एवं 7 दिवस से अधिक अनुपस्थित रहने के कारण 19 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण से वापिस भेज दिया। शेष 629 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण पूर्ण किया जिन्हें प्रशिक्षण उपरान्तप्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

## वनमण्डल वार प्रशिक्षणार्थी

उपर्युक्त 13 प्रशिक्षण केन्द्रों पर विभिन्न वन मण्डलों से महिला एवं पुरुष वन रक्षक प्रशिक्षणार्थी आए थे जिनका विवरण निम्न प्रकार हैः–

कक्षा कक्ष में प्रशिक्षण

| क्र.सं. | वनमण्डल का नाम | प्रशिक्षणार्थियों की संख्या | | कुल प्रशिक्षणार्थी |
|---|---|---|---|---|
| | | पुरुष | महिला | |
| 1. | अजमेर | 6 | 3 | 9 |
| 2. | उदयपुर | 15 | 9 | 24 |
| 3. | उदयपुर उत्तर | 13 | 3 | 16 |
| 4. | उदयपुर वन्य जीव | 2 | – | 2 |
| 5. | उदयपुर डी.ओ.डी. | 4 | – | 4 |
| 6. | बांसवाड़ा | 17 | 5 | 22 |
| 7. | डूंगरपुर | 18 | 6 | 24 |
| 8. | भीलवाड़ा | 7 | – | 7 |
| 9. | राजसमंद | 6 | – | 6 |
| 10. | बीकानेर मुवसं | 1 | 1 | 2 |
| 11. | बीकानेर | 2 | 0 | 2 |
| 12. | बीकानेर आई.जी.एन.पी.– ।। | 8 | 4 | 12 |
| 13. | छरतगढ़ आई.जी.एन.पी.– । | 9 | 4 | 13 |
| 14. | बीकानेर वन्य जीव | 2 | – | 2 |
| 15. | बीकानेर डीओडी–प्रथम | 6 | – | 6 |
| 16. | बीकानेर डीओडी–द्वितीय | 5 | 2 | 7 |
| 17. | गंगानगर | 14 | 8 | 22 |
| 18. | सूरतगढ़ डीओडी | 4 | – | 4 |
| 19. | जयपुर मुवस | 2 | – | 2 |
| 20. | जयपुर | 14 | 3 | 17 |
| 21. | जयपुर डीओडी | 10 | 1 | 11 |
| 22. | सीकर | 4 | – | 4 |
| 23. | झुंझुनूं | 6 | 1 | 7 |
| 24. | हनुमानगढ़ | 14 | 7 | 21 |
| 25. | बूंदी | 46 | 3 | 49 |
| 26. | बारां | – | 1 | 1 |
| 27. | झालावाड़ | – | 3 | 3 |
| 28. | राजसमंद वन्य जीव | – | 10 | 10 |
| 29. | माउंट आबू वन्य जीव | – | 1 | 1 |
| 30. | टोंक | – | 2 | 2 |
| 31. | कोटा | 17 | 6 | 23 |
| 32. | कोटा वन्य जीव | 13 | 5 | 18 |
| 33. | मुकन्दरा ने.पा. कोटा | 14 | 2 | 16 |
| 34. | बाड़मेर | 8 | 4 | 12 |
| 35. | जैसलमेर वजी | 15 | 5 | 20 |
| 36. | जैसलमेर आई.जी.एन.पी.– ।। | 12 | 3 | 15 |
| 37. | जोधपुर | 1 | – | 1 |
| 38. | जोधपुर वन्य जीव | 6 | 2 | 8 |
| 39. | पाली | 5 | – | 5 |
| 40. | जालौर | 3 | 1 | 4 |
| 41. | सिरोही | 9 | 2 | 11 |
| 42. | चित्तौड़गढ़ | 10 | 1 | 11 |
| 43. | चित्तौड़गढ़ वन्य जीव | 11 | 2 | 13 |
| 44. | प्रतापगढ़ | 34 | 8 | 42 |
| 45. | सरिस्का | 15 | 12 | 27 |
| 46. | दौसा | 6 | – | 6 |
| 47. | अलवर | 13 | 2 | 15 |
| 48. | भरतपुर | 14 | – | 14 |
| 49. | भरतपुर वन्य जीव | 6 | – | 6 |
| 50. | रणथम्भौर स.भा. | 6 | – | 6 |
| 51. | करौली वन्य जीव | 6 | – | 6 |
| 52. | चम्बल घड़ियाल सेंचुरी स.मा. | 12 | – | 12 |
| 53. | करौली | 9 | – | 9 |
| 54. | धौलपुर | 10 | – | 10 |
| 55. | स. माधोपुर | 7 | – | 7 |
| | **योग** | **497** | **132** | **629** |

**प्रशिक्षणार्थी स्थानीय भ्रमण के दौरान क्षेत्र वनस्पति की जानकारी लेते हुए।**

## प्रशिक्षण केन्द्र प्रभारियों का विवरण

इस प्रशिक्षण कार्य हेतु प्रत्येक केन्द्र के लिए एक कोर्स डायरेक्टर व एक असिस्टेन्ट कोर्स डायरेक्टर मनोनीत किए गए। उक्त दोनों अधिकारी प्रशिक्षण के विधिवत् सम्पादन, प्रशिक्षण कार्यक्रम में समन्वय, भ्रमण एवं परीक्षा आयोजन तथा परिणाम घोषित करने के लिए उत्तरदायी रहे। इनकी सूची निम्नानुसार है :–

**प्रशिक्षण केन्द्रों के प्रभारी**

| क्र.सं. | प्रशिक्षण केन्द्र | कोर्स डायरेक्टर का नाम | सहायक कोर्स डायरेक्टर का नाम |
|---|---|---|---|
| 1. | अजमेर | श्री राजीव चतुर्वेदी उ.व.सं | किशोर गुप्ता स.व.सं. |
| 2. | भरतपुर | श्री अनूप के.आर. उ.व.सं. | नेकी राम जाट स.व.सं. |
| 3. | सीकर | राजेन्द्र कुमार हुड्डा उ.व.सं. | भीमाराम जाट स.व.सं. |
| 4. | सरिस्का | मनोज पाराशर उ.व.सं. | राजेश फागना स.व.सं. |
| 5. | रणथम्भौर (स.माधोपुर) | राहुल भटनागर उ.व.सं. | दिनेश गुप्ता स.व.सं. |
| 6. | बूंदी | दिग्विजय गुप्ता उ.व.सं. | सुरेश मिश्रा स.व.सं. |
| 7. | कोटा | विजय एन. उ.व.सं. | जय सिंह राठौड़ स.व.सं. |
| 8. | बांसवाड़ा | अमरसिंह गोठवाल उ.व.सं. | वीर सिंह ओला स.व.सं. |
| 9. | चित्तौड़गढ़ | डॉ. टी. मोहन राज उ.व.सं. | सुश्री अनिता स.व.सं. |
| 10. | बीकानेर | दयाराम सहारण उ.व.सं. | धर्मपाल यादव स.व.सं. |
| 11. | उदयपुर | हरिणी वी. उ.व.सं. | एस.एन. सिंह शक्तावत स.व.सं. |
| 12. | अलवर | रमेश चन्द सैनी उ.व.सं. | राजीव लोचन पाठक स.व.सं. |
| 13. | जोधपुर | पदम सिंह राठौड़ उ.व.सं. | गौतम राज मेहता स.व.सं. |

**प्रशिक्षणार्थी नर्सरी तकनीक की जानकारी लेते हुए**

## प्रशिक्षण अवधिः–

इस प्रशिक्षण की अवधि विभाग के प्रशिक्षण आदेश के अनुरूप तीन माह रही। प्रशिक्षण दिनांक 14 अक्टूबर, 2013 से आरम्भ हुआ तथा इसका समापन 13 जनवरी, 2014 को हुआ।

à{e j Um{W`m|H$s gm_mÝ` nð{^{_

● **आयु वर्गः–** भर्ती प्रक्रिया में प्रशिक्षणार्थियों की आयु सीमा 18 से 35 वर्ष रखी गई थी किन्तु महिलाओं, भूतपूर्व सैनिकों, आरक्षित वर्ग के अभ्यर्थियों एवं सरकारी स्थाईकर्मियों के लिए राज्य सरकार के नियमानुसार ऊपरी आयु सीमा में छूट प्रदान की गई थी तथापि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित प्रशिक्षणार्थियों की आयु इस प्रकार रहीः–

| क्र.सं. | आयु वर्ग (वर्ष) | प्रशिक्षणार्थियों की संख्या | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | महिला | प्रतिशत | पुरुष | प्रतिशत |
| 1. | 18–21 | 17 | 12.88 | 49 | 9.86 |
| 2. | 21–25 | 46 | 34.85 | 176 | 35.41 |
| 3. | 25–30 | 44 | 33.33 | 183 | 36.82 |
| 4. | 30 से ऊपर | 25 | 18.94 | 89 | 17.91 |
| | योग | 132 | 100% | 497 | 100% |

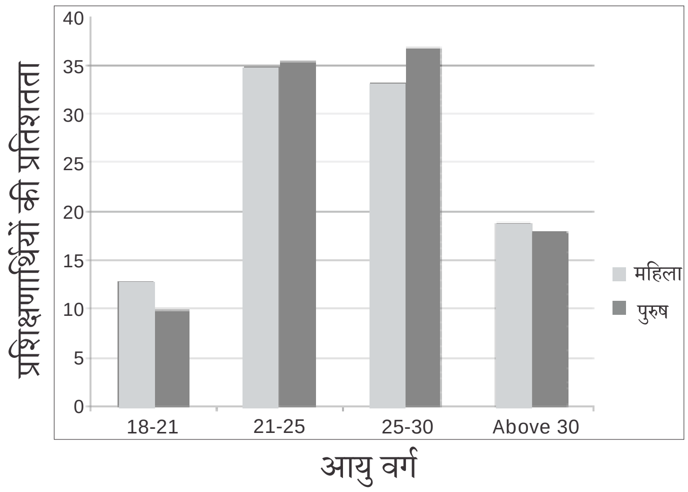


उपर्युक्त सारिणी व चार्ट के अवलोकन से स्पष्ट है कि सर्वाधिक प्रशिक्षणार्थी महिलाओं में 21 से 25 वर्ष के 46 (अर्थात् कुल महिला प्रशिक्षणार्थियों का 34.85 प्रतिशत) तथा पुरुषो में 25 से 30 वर्ष तक की आयु के 183 (अर्थात् कुल पुरुष प्रशिक्षणार्थी का 36.82 प्रतिशत) रहे हैं।

**महिला प्रशिक्षणार्थियों को वृक्षारोपण की जानकारी देते हुए**

● **शैक्षणिक योग्यताः –** राज्य सरकार के नियमानुसार यद्यपि भर्ती प्रक्रिया में न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता मान्यता प्राप्त बोर्ड से सैकण्डरी या समतुल्य परीक्षा उत्तीर्ण रखी गई थी किन्तु वन रक्षक भर्ती परीक्षा में उच्च शैक्षणिक योग्यताधारी प्रत्याशी उत्तीर्ण होकर भर्ती हुए। प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक योग्यता निम्न सारिणी व चार्ट में द्रष्टव्य हैः–

**प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक योग्यता**

| क्र. सं. | योग्यता | प्रशिक्षणार्थियों की संख्या | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | **स्कूल शिक्षा** | **महिला** | **प्रतिशत** | **पुरुष** | **प्रतिशत** |
| 1. | सैकण्डरी | 03 | 2.27 | 35 | 7.04 |
| 2. | सीनियर सैकण्डरी | 22 | 16.66 | 82 | 16.50 |
| | **कॉलेज शिक्षा** | | | | |
| 3. | स्नातक | 63 | 47.73 | 272 | 54.73 |
| 4. | स्नातकोत्तर | 44 | 33.34 | 108 | 21.73 |
| | 50 योग (1 से 4 तक) | 132 | 100% | 497 | 100% |
| | **व्यावसायिक योग्यता** | | | | |
| 5. | एस.टी.सी. | 16 | 12.12 | 9 | 1.81 |
| 6. | बी.एड. | 67 | 50.76 | 189 | 38.03 |
| 7. | अन्य (आई.टी.आई., एम. फिल, बी.पी.एड. एल.एल.बी. कम्प्यूटर डिप्लोमा) | 02 | 01.52 | 18 | 03.62 |

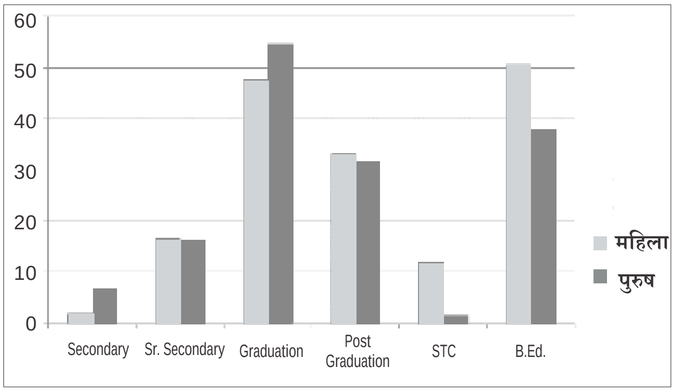


उपर्युक्त सारणी एवं चार्ट के अवलोकन से स्पष्ट है कि न्यूनतम शैक्षणिक योग्यताधारी महिलाओं में मात्र 3 प्रशिक्षणार्थी एवं पुरुष में 35 प्रशिक्षणार्थी हैं जो कुल महिला एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थियों का क्रमशः 2.27% एवं 07.04% ही है।

शैक्षणिक पृष्ठभूमि के विवरण में ये रेखांकित करना अत्यन्त प्रासंगिक है कि अन्य योग्यताधारियों में एस. टी. सी. के 25, बी.एड. के 256 तथा आई. टी. आई., एम.फिल., बी.पी.एड., एल.एल.बी. तथा कम्प्यूटर डिप्लोमा के 20 प्रशिक्षणार्थी शिक्षित रहे हैं।

**महिला प्रशिक्षणार्थी पी.आर.ए. का अभ्यास करते हुए।**

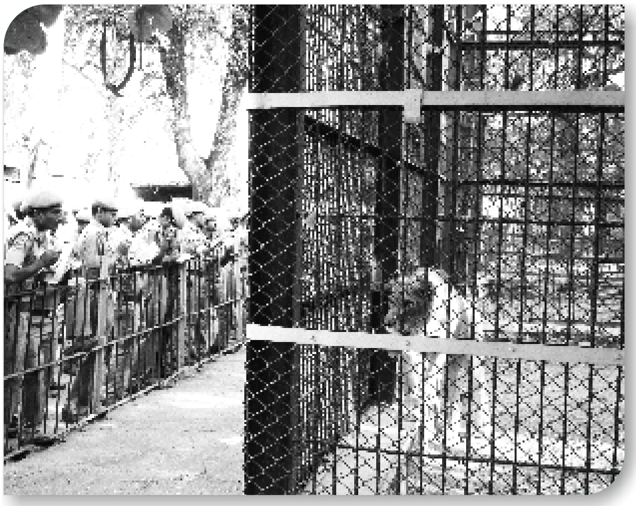

**कोटा चिड़ियाघर में प्रशिक्षणार्थी वन्य जीव प्रबन्धन का अध्ययन करते हुए।**

## प्रशिक्षण व्यवस्थाएं

● **प्रशिक्षण केन्द्र एवं आवास सुविधाः–** सभी केन्द्रों पर प्रशिक्षणार्थियों हेतु कक्षा–कक्ष एवं आवास की व्यवस्थाएं की गई थीं। दो स्थाई प्रशिक्षण केन्द्रों अलवर एवं जोधपुर में स्थाई छात्रावास व व्याख्यान कक्ष उपलब्ध है। सैटेलाइट केन्द्रों में कहीं पर किराए के भवन अथवा उपलब्ध विभागीय भवनों का उपयोग किया गया जिनकी सूची इस प्रकार हैः–

| क्र.सं. | प्र. केन्द्र का नाम | कक्षा कक्ष | आवास | विशेष विवरण |
|---|---|---|---|---|
| 1. | कोटा | लाडपुरा रेंज कार्यालय, कोटा | लाडपुरा रेंज कार्यालय, कोटा | सरकारी भवन |
| 2. | बीकानेर | कृषि विज्ञान केन्द्र कृषि विश्व. बीकानेर | कृषि विज्ञान केन्द्र कृषि विश्व. बीकानेर | किराए का मकान |
| 3. | चित्तौड़गढ़ | वन चेतना केन्द्र वन्य जीव चित्तौड़गढ़ | गिरधर गेस्ट हाउस चित्तौड़गढ़ | किराए का मकान |
| 4. | भरतपुर | डॉ. सालीम अली व्याख्यान केन्द्र भरतपुर | घना बर्ड सेंचुरी कैम्पस भरतपुर | सरकारी भवन |
| 5. | बांसवाड़ा | भापोर नर्सरी, बांसवाड़ा | भापोर नर्सरी, बांसवाड़ा | सरकारी भवन |
| 6. | बूंदी | बूंदी नर्सरी | बूंदी नर्सरी | सरकारी भवन |
| 7. | अजमेर | उपवन संरक्षक कार्यालय, अजमेर | घूघरा घाटी नर्सरी, अजमेर | सरकारी भवन |
| 8. | सरिस्का | एन.आई.सी. केन्द्र, सरिस्का | सरिस्का कैम्पस | सरकारी भवन |
| 9. | सीकर | धर्मशाला कल्याण आरोग्य सदन, सीकर | धर्मशाला कल्याण आरोग्य सदन,सीकर | किराये का मकान |
| 10. | रणथम्भौर, स.मा. | कृषि भवन, स. माधोपुर | कृषि भवन, स. माधोपुर | किराये का मकान |
| 11. | उदयपुर | वन भवन चेतक सर्किल, उदयपुर | वन भवन चेतक सर्किल, उदयपुर | सरकारी भवन |
| 12. | अलवर | नारायण विलास वन प्रशिक्षण केन्द्र, अलवर | गुरुजी की कोठी, अलवर | सरकारी भवन, अलवर |
| 13. | जोधपुर | वन प्रशिक्षण केन्द्र, जोधपुर | वन प्रशिक्षण केन्द्र, जोधपुर | सरकारी भवन |

● **भोजन :** सभी केन्द्रों पर प्रशिक्षणार्थियों ने स्वयं के स्तर पर मैस का संचालन किया। विभागीय अधिकारियों व कर्मचारियों की देखरेख में प्रशिक्षणार्थियों में से तीन सदस्यीय मैस समितियां बनाई गईं जिन्होंने मासिक आधार पर मैस का संचालन किया।

● **परिवहन :** इस प्रशिक्षण के दौरान कतिपय केन्द्रों पर जहां प्रशिक्षणार्थियों के आवास, कक्षा–कक्ष से कुछ दूरी पर रहे वहाँ कक्षा कक्ष तक पहुँचने के लिए प्रशिक्षणार्थियों ने अपनी निजी साइकिलों का उपयोग किया। स्थानीय भ्रमण के लिए विभागीय वाहनों यथा उड़नदस्ते के कैण्टर का उपयोग किया गया तथा 10 दिवसीय भ्रमण के लिए निजी बसें किराये पर ली गईं।

## दक्षता विकास :

● **पाठ्यक्रमः–** शिक्षा पूर्ण कर भर्ती हुए वन रक्षकों की वन प्रबन्ध तकनीक में उनकी दक्षता विकसित करने के उद्देश्य से विभाग ने पाठ्यक्रम निर्धारित किया हुआ है। इस निर्धारित पाठ्यक्रम का सघन प्रशिक्षण तीन माह तक दिया जाकर उन्हें वन प्रबन्ध हेतु दक्ष किया जाता है जिसका विवरण निम्नांकित है।

**वॉच टॉवर से जंलग की निगरानी**

| क्रमांक | विषय | प्रशिक्षण घटक | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | सैद्धांतिक अध्ययन कालांश (घंटे) | प्रायोगिक अध्ययन कालांश (घंटे) | क्षेत्र अभ्यास कैंप, स्थानीय शैक्षणिक भ्रमण (घंटे) | प्रशिक्षण भ्रमण दिवस |
| 1. | वन सुरक्षा एवं कानून | 20 | 14 | 16 | – |
| 2. | वन लेखा एवं राज. सेवा नियम | 7 | 8 | 8 | – |
| 3. | क्षेत्र वनस्पति | 1 | 2 | 16 | – |
| 4. | वन वर्धन तथा प्रबोधन एवं मूल्यांकन | 18 | 18 | 34 | 4 दिवस |
| 5. | साझा वन प्रबन्ध | 13 | 9 | 12 | 4 दिवस |
| 6. | वन्य जीव प्रबन्ध | 10 | 2 | 12 | 2 दिवस |
| 7. | वन उपयोग | 12 | – | 8 | – |
| 8. | सर्वे, वन मिति एवं अभियांत्रिकी | 15 | 11 | 22 | – |
| | **कुल योग** | **96** | **64** | **128** | **10 दिवस** |

उपर्युक्त विषयों पर सभी केन्द्रों पर सम्बन्धित विषय–विशेषज्ञों के व्याख्यान करवाए गए। इस सत्र में नवीन पहल करते हुए कतिपय बाहरी विषय विशेषज्ञों को विशेष रूप से आमंत्रित कर प्रशिक्षणार्थियों को उनसे रूबरू करवाया गया ताकि प्रशिक्षणार्थी न केवल उनके अनुभवों का लाभ उठा सके, साथ ही उनकी जिज्ञासाओं का शमन भी व्यवहारिक रूप से हो सके। इस हेतु अवकाश प्राप्त भारतीय वन सेवा, राज्य वन सेवा के अधिकारी, रेन्जर्स, म.गा. नरेगा से जुड़े अधिकारी, अभियन्ताओं, ख्यातनाम पर्यावरणविदों, ग्रामीणों, विश्वविद्यालय व्याख्याताओं, उद्यान विज्ञों, पुलिस अधिकारियों, चिकित्सकों आदि वक्ताओं को फैकल्टी के रूप में आमन्त्रित कर उनके ज्ञान एवं अनुभवों का लाभ प्रशिक्षणार्थियों को दिया गया।

## स्थानीय क्षेत्र भ्रमण

सभी प्रशिक्षणार्थियों को इस सत्र में कुल 128 घण्टे का क्षेत्र अभ्यास भी करवाया गया इस कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को अपने–अपने संस्थानों के समीप के वन क्षेत्रों, वृक्षारोपण व गांवों में ले जाया जाकर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। क्षेत्रीय वनस्पति की पहचान, वन अपराध प्रकरण तैयार करने, पौधशाला का अध्ययन, वनमिति का अभ्यास, ग्रामीणों से चर्चा, वन्य जीवों का अवलोकन व अध्ययन, उनकी रुचि, आदतों व व्यवहार को समीप से देखना आदि के सम्बन्ध में प्रशिक्षणार्थियों को व्यवहारिक ज्ञान दिया गया। स्वयं प्रशिक्षणार्थियों ने अपने हाथों से गतिविधियां सम्पादित कर वानिकी प्रबन्धन का प्रत्यक्ष अनुभव लिया।

सभी संस्थानों में प्रशिक्षणार्थियों ने परिसर को स्वच्छ व साफ सुथरा बनाए रखने का कार्य भी किया। परिसर स्थित पेड़–पौधों की देखभाल, खेल के मैदानों का संधारण व अन्य अनुषंगी कार्य प्रशिक्षणार्थियों ने स्वयं किए। ग्राम्य वन सुरक्षा एवं प्रबन्ध समितियों के माध्यम से क्रियान्वित की जा रही साझा वन प्रबन्धन की संकल्पना के व्यावहारिक जानकारी के लिए उन्हें अनेक समितियों से मिलवाया गया व मौके पर उनकी गतिविधियों का विहंगावलोकन करवाया गया।

## क्षेत्र भ्रमण

प्रशिक्षणार्थी वन रक्षकों के लिए 10 दिवस का शैक्षणिक भ्रमण का कार्यक्रम भी रखा गया। प्रत्येक संस्थान से बस द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को अन्य निकटवर्ती जिलों में ले जाया जाकर भ्रमण करवाया गया। प्रत्येक संस्थान के लिए भ्रमण के कार्यक्रम इस तरह आरेखित किए गए कि प्रशिक्षणार्थियों को सभी वानिकी गतिविधियों का दिग्दर्शन हो सके अतः भ्रमण कार्यक्रम में कम से कम एक वन्य जीव संरक्षित क्षेत्र, परम्परागत पौधशालाएं, हाईटेक नर्सरी, पुनर्वास केन्द्र, वृक्षारोपण, आरक्षित व रक्षित वन, चिड़ियाघर आदि सम्मिलित किए गए। वन विकास कार्यों का अवलोकन कराते समय यह ध्यान रखा गया कि राज्य में सभी पारिस्थितिकी तंत्रों की जैव विविधता व उनमें क्रियान्वित की जा रही सभी योजनाओं का ज्ञान प्राप्त हो सके। इसी प्रकार अभियांत्रिकी, भू एवं जल संरक्षण आदि के कार्यों को भी भ्रमण कार्यक्रम में सम्मिलित किया गया ताकि प्रशिक्षणार्थी सभी कार्यक्रमों व योजनाओं का व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त कर सके। भ्रमण के दौरान स्थानीय अधिकारियों के व्याख्यान भी कराने की व्यवस्था की गई।

# à{e j U J{V{d{Y `m : P b{H$ `m

{MÎmmS> JT> H$ÝÐ g à{e j UmWu j Ì ^_U hV àñWmZ H$aV hE&

n `mdaU OmJ éH$Vm abr H$m Am `mOZ

टाईगर ट्रस्ट संस्थान नई दिल्ली द्वारा वन्य जीव प्रबन्धन का प्रशिक्षण

वन क्षेत्र की गश्त

वृक्षारोपण में सूखे पत्थरों की दीवार का अध्ययन

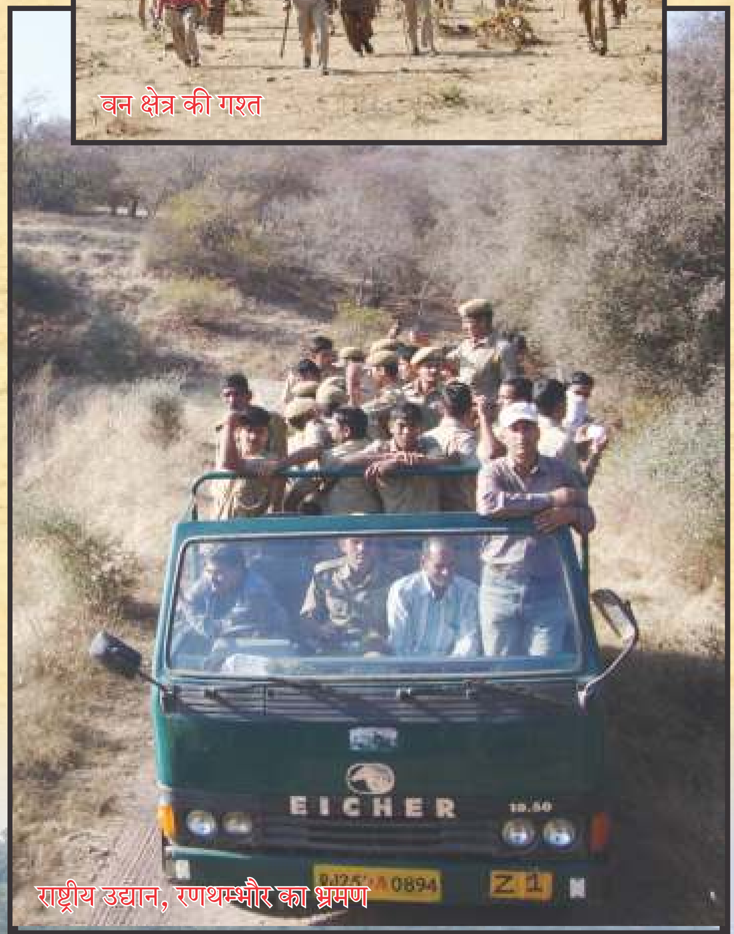


राष्ट्रीय उद्यान, रणथम्भौर का भ्रमण

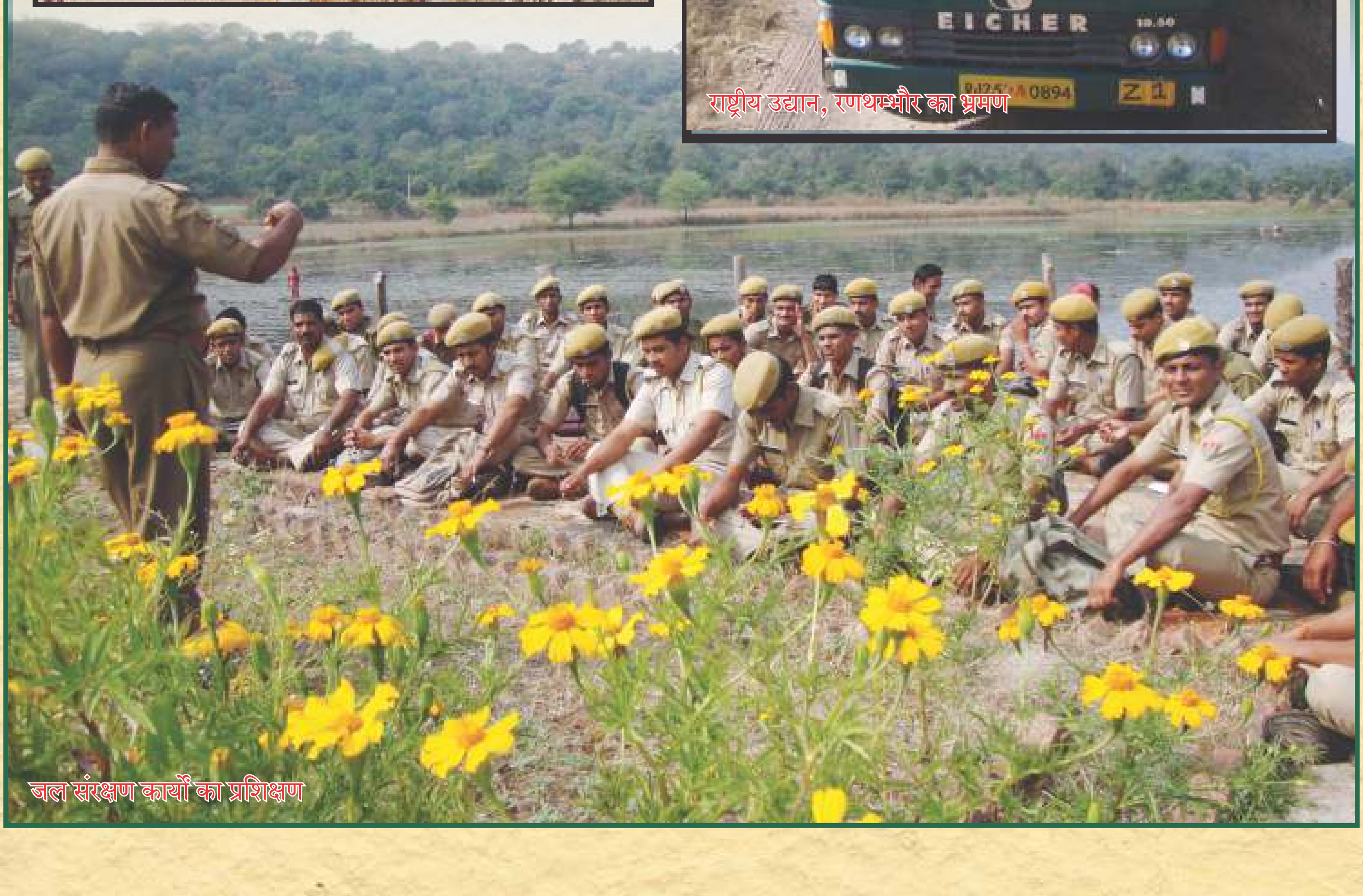

जल संरक्षण कार्यों का प्रशिक्षण

अजमेर

# naS› H$s P b{H$`m

जोधपुर

अलवर

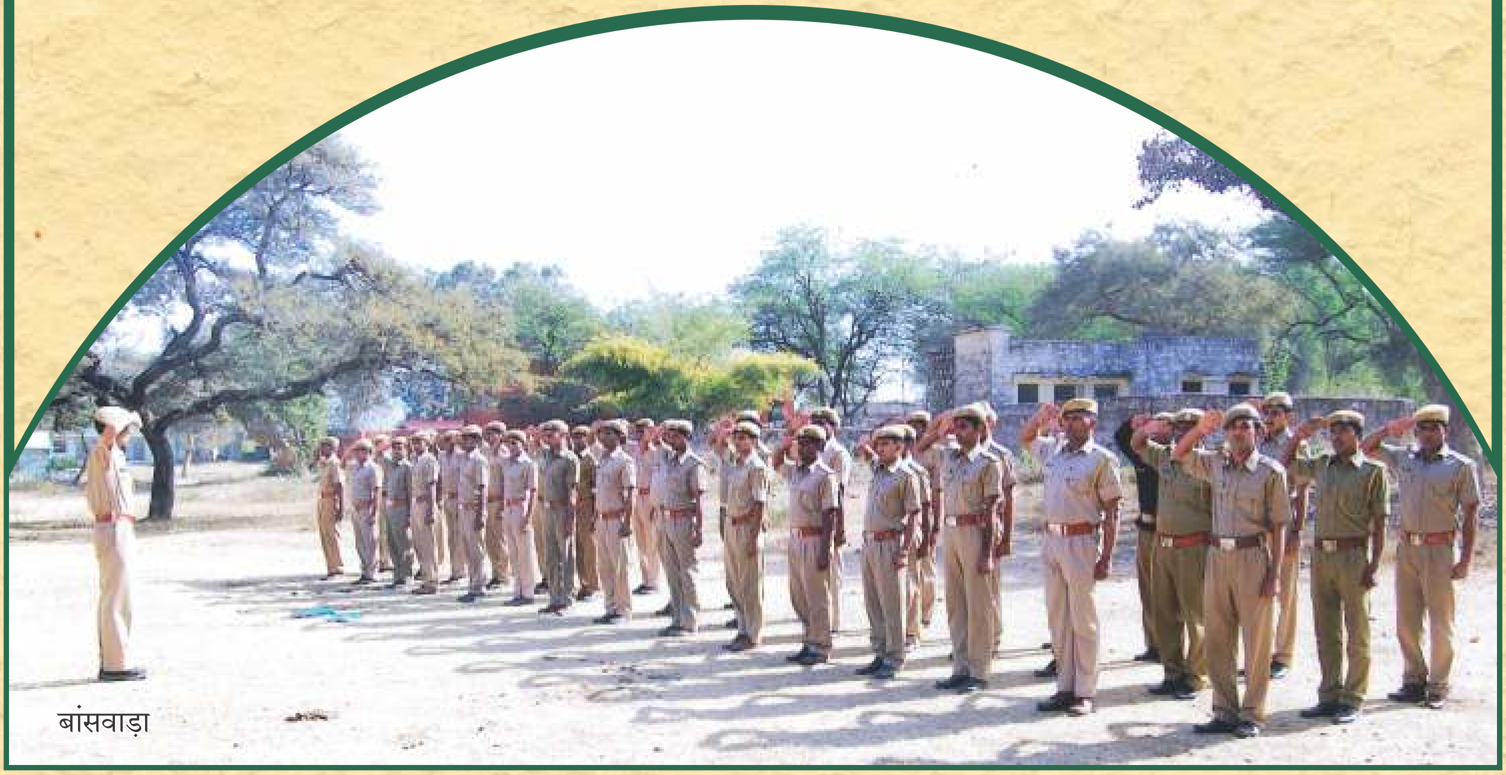

बांसवाड़ा

`mJ Ed|
J{V{

I b H$X
d{Y`m

{d{^Þ à{e j U H$ÝÐm H$s Pb{H$`m

# à{VH$b n[apñW{V`m| H$m à{e j U

à{e j U H$s {d{dY J{V{d{Y`m

## क्षेत्र भ्रमण के विशिष्ट आकर्षण

- रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान का भ्रमण ।
- विषधारी रामगढ़ अभ्यारण्य बूंदी का भ्रमण।
- सुन्धामाता अभ्यारण्य का भ्रमण ।
- मुकुन्दरा हिल्स राष्ट्रीय पार्क, कोटा की इको पर्यावरण समितियों के साथ चर्चा।
- मुख्य जल स्रोतों पर स्थानीय एवं प्रवासी पक्षियों की पहचान करना।
- RFBP-II कार्यालय के विशेषज्ञों के द्वारा जी.पी.एस. का विशेष प्रशिक्षण ।
- H.C.M. RIPPA बीकानेर के द्वारा आपदा प्रबंधन पर विशेष प्रशिक्षण।
- पुलिस लाइन बीकानेर द्वारा अस्त्र शस्त्र प्रशिक्षण।
- तालछापर अभ्यारण्य भ्रमण ।
- माचिया बायालोजिकल पार्क का अध्ययन ।
- काजरी एवं आफरी जोधपुर का भ्रमण ।
- कुम्भलगढ़ अभ्यारण्य का भ्रमण।
- उदयपुर में वानिकी विकास कार्यों एवं जे.एफ.एम. गतिविधियों का अध्ययन ।
- डियर पार्क चित्तौड़गढ़ का भ्रमण ।
- बांसी एवं धरियावाद रेंजों के मेडिसिनल वृक्षारोपणों एवं साझा वन प्रबंध कार्यों का अध्ययन ।
- एसएचजी गतिविधियों का अध्ययन ।
- सीतामाता अभ्यारण्य का भ्रमण ।
- फुलवारी की नाल में वन्य जीव प्रबंधन कार्यों एवं इको ट्यूरिज्म कार्यो का अध्ययन ।
- स्वरूपगंज विभागीय कार्य मण्डल डिपो की कार्य प्रणाली एवं भण्डारगृह का अध्ययन ।
- माउंट आबू अभ्यारण्य में वन्य जीव प्रबंधन एवं इकोट्यूरिज्म कार्यो का अध्ययन ।
- राष्ट्रीय एकता दिवस दिनांक 25.11.2013 को पर्यावरण वन्य जीव एवं वन संरक्षण हेतु जागरूकता रैली का आयोजन किया गया ।
- ब्लैक बैल्ट धारी प्रशिक्षकों द्वारा जूडो कराटे का प्रशिक्षण ।
- माउंट आबू दांतीवाड़ा प्रोजेक्ट के तहत भू एवं जल संरक्षण कार्यों का अध्ययन ।
- उदयपुर में सज्जनगढ़ अभ्यारण्यका भ्रमण ।
- टाईगर ट्रस्ट नई दिल्ली द्वारा सरिस्का में प्रशिक्षणार्थियों को वन्य जीवों की सुरक्षा एवं प्रबन्ध का प्रशिक्षण।
- सरिस्का अभ्यारण्य से विस्थापित गाँवों के रिलोकेशन की प्रक्रिया का अध्ययन।
- केवला देव राष्ट्रीय उद्यान में माइग्रेटरी पक्षियो के आवास-प्रवास का अध्ययन एवं उनकी पहचान करना।

**इन्द्रगढ़ नर्सरी, बून्दी में धौंक के पौधे तैयार करने की तकनीक की जानकारी देते हुए।**

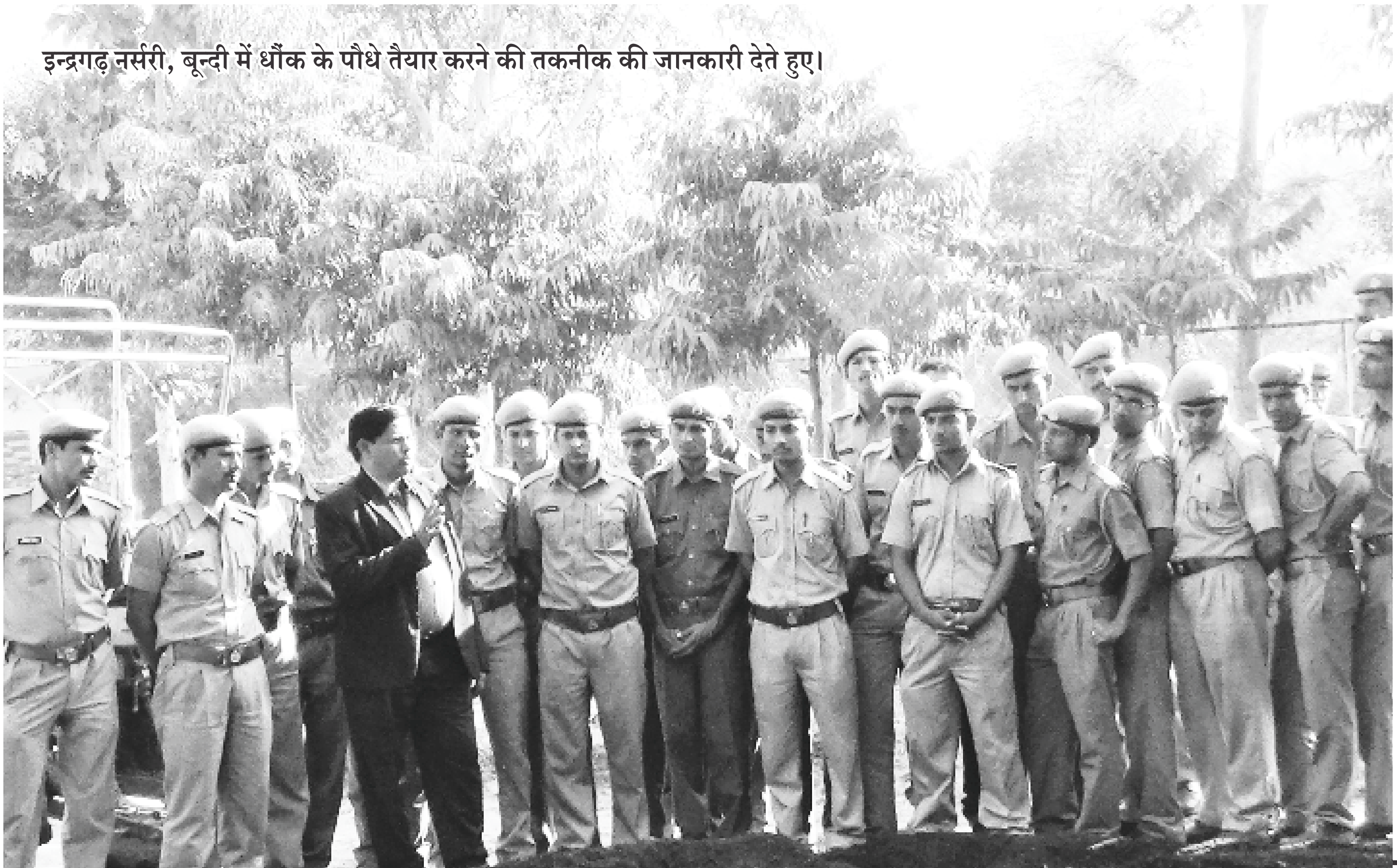

## प्राथमिक चिकित्सा

प्रशिक्षणार्थियों को भविष्य में वन क्षेत्रों में कार्य करना होगा जहाँ उपचार की सुविधाएं उपलब्ध नहीं होती हैं। अतः प्रशिक्षणार्थियों को चिकित्सकों के व्याख्यान करवाए जाकर प्राथमिक चिकित्सा की प्रायोगिक शिक्षा भी दिलवाई गई।

## शस्त्र संधारण एवं प्रयोग

विभाग के कार्मिकों को विधि प्रवर्तन अथवा भीड़ नियंत्रण हेतु शस्त्रों की आवश्यकता होती है। इन्हें शस्त्र राज्य सरकार के नियमानुसार एवं आवश्यकतानुसार उपलब्ध कराये जाते हैं। इस प्रशिक्षण सत्र में सभी केन्द्रों पर प्रशिक्षणार्थियों को शस्त्र संधारण व प्रयोग का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया।

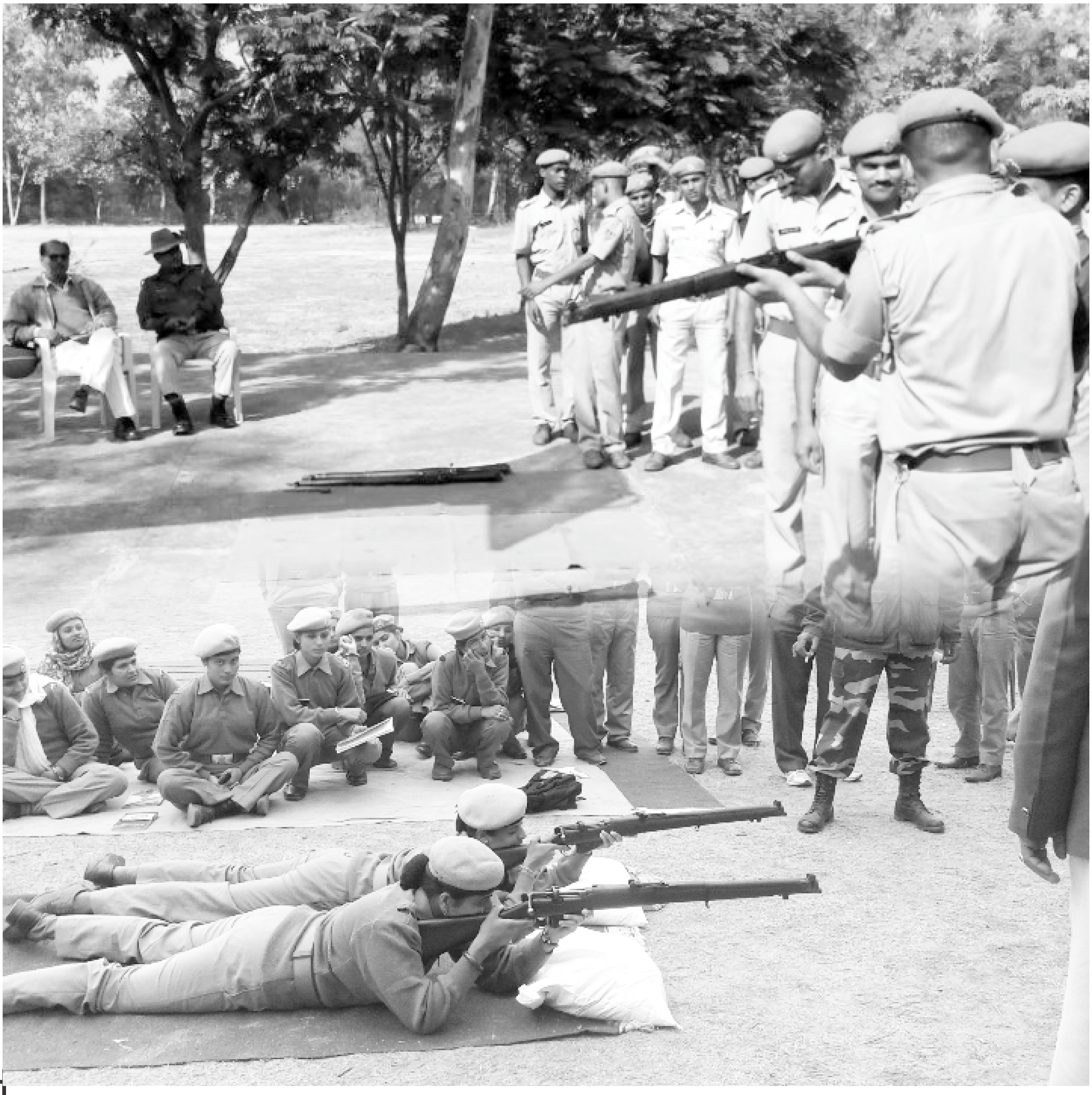

## शारीरिक विकास

सभी प्रशिक्षण केन्द्रों पर प्रशिक्षणार्थियों के शारीरिक विकास पर पूर्ण ध्यान दिया गया क्योंकि चुस्त दुरुस्त मानव संसाधन किसी भी संगठन की निधी होती है। शारीरिक रूप से उन्हें चुस्त बनाए रखने के लिए निम्नांकित गतिविधियाँ की गईं :

● **पी.टी. परेडः–** सभी प्रशिक्षण केन्द्रों में दैनिक गतिविधियों में प्रातः 6.30 से 8.00 का समय पी.टी. परेड, शारीरिक व्यायाम हेतु निर्धारित किया। विभाग में नियमित प्रशिक्षक न होने के कारण पृथक्–पृथक् केन्द्रों पर पृथक्–पृथक् किन्तु विशेषज्ञ व्यक्तियों को नियुक्त किया गया। कतिपय केन्द्र पर विभाग में कार्यरत पूर्व सैनिकों द्वारा इस दायित्व का निर्वाह किया गया। कहीं पर पुलिस विभाग की सेवाएँ ली गईं तथा कहीं पर स्वयं प्रशिक्षणार्थियों में बी.पी.एड. अथवा सी.पी.एड. डिग्रीधारी व्यक्तियों ने यह कार्य किया। उक्त अवधि में पर्यवेक्षण के लिए विभागीय अधिकारी सदैव मौजूद रहे। सत्रान्त में मैराथन दौड़ का आयोजन भी किया गया।

● **आत्मरक्षाः–** कतिपय केन्द्रों पर, जहां सुविधा उपलब्ध हो पाई, प्रशिक्षणार्थियों को जूडों–कराटे तथा आत्मरक्षा की अन्य विधियों जैसे लाठी चलाना आदि का प्रशिक्षण भी दिया गया।

● **मानसिक विकासः–** प्रशिक्षणार्थियों के मानसिक विकास पर ध्यान देना भी उतना ही आवश्यक है जितना कि शारीरिक व दक्षता विकास। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रशिक्षण केन्द्रों में निम्न गतिविधियां की गईः

- योग प्रशिक्षण
- आर्ट ऑफ लिविंग के प्रशिक्षण
- ब्रह्मकुमारी विश्वविद्यालय द्वारा तनाव प्रबन्धन पर प्रशिक्षण
- अभिप्रेरण पर विशिष्ट व्याख्यान
- सूर्य नमस्कार
- प्रतिदिन दौड़ का अभ्यास
- व्यक्तित्व विकास का प्रशिक्षण

● **खेलकूदः–** सभी प्रशिक्षण केन्द्रों पर सायंकाल एक घण्टा खेलकूद के लिए निर्धारित किया गया। इस अवधि में सभी केन्द्रों पर उपलब्ध सुविधानुसार निम्न खेलों की सुविधा उपलब्ध कराई गईं जैसे :– खो–खो, कबड्डी, वॉलीबाल, क्रिकेट, बैडमिन्टन, टेबल टेनिस, कैरम, हैण्डबाल, एयरो जम्प, शतरंज, रिंग, रस्सी कूदना। सत्र समाप्ति पर प्रशिक्षणार्थियों के 'हाउस' के मध्य खेल मुकाबले आयोजित किए गए व विजयी टीम और व्यक्तिगत स्तर पर पुरस्कृत किया गया।

● **मनोरजंन एवं अन्य गतिविधियां :–** टी.वी., स्थानीय अखबार की उपलब्धता, समूह अनुसार सांस्कृतिक कार्यक्रम, गायन, नाटक इत्यादि।

## नेतृत्व एवं प्रबन्ध क्षमता का विकास

प्रशिक्षणार्थियों में नेतृत्व एवं प्रबन्ध क्षमता के विकास के लिए अनेक गतिविधियां की गईः–

1. प्रशिक्षणार्थियों में से प्रत्येक को दैनिक आधार पर आर्डरली ऑफिसर बनाया गया। उनका प्रमुख कार्य प्रशिक्षणार्थियों में अनुशासन बनाए रखना तथा 'हाउसेज' के मध्य समन्वय बनाए रखना है। प्रशिक्षणार्थियों की रौल कॉल व सबकी उपस्थिति सुनिश्चित करना भी इन्हीं का कार्य है। इस गतिविधि से प्रशिक्षणार्थियों में उत्तरदायित्व बोध जागृत होता है।

2. प्रबन्ध क्षमता के विकास के उद्देश्य से प्रशिक्षणार्थियों से सम्बन्धित कार्यो के लिए अनेक समितियां गठित की जाती हैं जो मासिक आधार पर कार्य करती हैं। सभी समितियां तीन सदस्यीय बनाई गईं जिनमें अध्यक्ष, कोषाध्यक्ष व सचिव का मनोनयन/निर्वाचन किया गया। उपर्युक्त सभी समितियों पर सामान्य पर्यवेक्षण विभागीय अधिकारियों ने किया। इनका विवरण इस प्रकार हैः–

(अ) मैस समिति

(ब) क्रीड़ा समिति

(स) आवास समिति

(द) सांस्कृतिक समिति

(य) प्रशिक्षण एवं भ्रमण समिति

(र) अनुशासन एवं सुरक्षा समिति

(ल) हाउस का गठनः– प्रशिक्षणार्थियों को सामाजिक वातावरण उपलब्ध कराने तथा प्रतिस्पर्धा विकसित करने के उद्देश्य से 7 से 11 प्रशिक्षणार्थियों को मिलाकर एक हाउस बनाया गया। अलग–अलग प्रशिक्षण केन्द्रों पर इन ''हाउसेज'' को स्थानीय संस्कृति, स्वतन्त्रता सेनानियों, विद्वानों, संतों, रानियों, विरांगनाओं एवं वन तथा वन्य जीवों से सम्बन्धित नाम दिए गए। उदाहरणार्थ, चित्तौड़गढ़ केन्द्र पर ये नाम – अशोक, सागवान, अर्जुन, रोहिडा, नीम, खेजरी, महुआ रहे। अजमेर में मोर, मैना, तोता, कंगारू आदि। उदयपुर में पद्मिनी, मीरा, जोधा, अम्बा, राधा एवं रूकमणी। बीकानेर में केशवादन्द, विवेकानन्द, सुभाष चन्द्र, चन्द्रशेखर एवं पटेल। बांसवाडा में लॉयन, टाईगर, पैंथर, चीता आदि।

## सांस्कृतिक कार्यक्रम

प्रशिक्षणार्थियों के मानसिक विकास के उद्देश्यों से सभी स्थाई व सैटेलाइट प्रशिक्षण केन्द्रों में प्रशिक्षणार्थियों में छिपी सांस्कृतिक प्रतिभा को सत्र पर्यन्त प्रोत्साहित किया गया और सत्र के अन्त में एक सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया जाकर सर्वश्रेष्ठ कलाकार को पुरस्कृत किया गया।

## अंतिम परीक्षा

सत्र के अन्त में सभी विषयों की मौखिक परीक्षाएँ ली गईं। इस हेतु परीक्षकों की केन्द्रवार नियुक्ति की जाकर मुख्य वन संरक्षक (प्रशिक्षण एवं अनुसंधान) से अनुमोदित करवाई गई। कक्षा परीक्षाओं और अन्तिम परीक्षा को मिलाकर कुल पूर्णांक 800 रहे। विभाग के नियमानुसार 75 प्रतिशत अर्थात् 600 व उससे अधिक अंक प्राप्तकर्ता को विशिष्ट श्रेणी, 50 से 75 प्रतिशत अर्थात् 400 से 599 तक अंक प्राप्त करने वालों को उच्च श्रेणी तथा 40 से 50 प्रतिशत तक अंक प्राप्त करने वाले प्रशिक्षणार्थियों को निम्न/पास श्रेणी प्रदान की गई।

## प्रशिक्षण समापन समारोह कार्यक्रम :

वनरक्षकों के आधारभूत प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन समारोह सभी प्रशिक्षण केन्द्रों पर एक साथ दिनांक 13.1.2014 को आयोजित कियागया। नवनियुक्त वनरक्षकों का उत्साह एवं मनोबल बढ़ाने हेतु अति. प्र.मु.व.स. प्रशि. एवं अनु. राज. जयपुर के आग्रह पर प्रधान मुख्य वनरक्षक, प्रशि. अनु., शिक्षा एवं प्रसार, राज. के आदेश क्रमांक–एफ 7 (1) 15 प्रशि./प्रमुवसं/ट्री/12–13/18–30 दिनांक 8.1.2014 द्वारा प्रशिक्षण केन्द्र वार

उनके सम्मुख अंकित अधिकारीगण को समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में नामांकित किया गया:–

| क्र.सं. | प्रशिक्षण केन्द्र का नाम | नामांकित अधिकारी का नाम |
|---|---|---|
| 1. | वन प्रशिक्षण केन्द्र अलवर | मु.व.स. प्रशि. एवं अनु. जयपुर |
| 2. | वन प्रशिक्षण केन्द्र जोधपुर | मु.व.सं. जोधपुर |
| 3. | सैटे. प्रशिक्षण केन्द्र बांसवाड़ा | मु.व.सं. उदयपुर (वन्यजीव) |
| 4. | सैटे. प्रशिक्षण केन्द्र चित्तौड़गढ़ | मु.व.सं. जोधपुर (वन्य जीव) |
| 5. | सैटे. प्रशिक्षण केन्द्र उदयपुर | मु.व.सं. उदयपुर |
| 6. | सैटे. प्रशिक्षण केन्द्र कोटा | मु.व.सं. कोटा |
| 7. | सैटे. प्रशिक्षण केन्द्र बूंदी | मु.व.सं. कोटा (वन्य जीव) |
| 8. | सैटे. प्रशिक्षण केन्द्र अजमेर | मु.व.सं. अजमेर |
| 9. | सैटे. प्रशिक्षण केन्द्र बीकानेर | मु.व.सं. बीकानेर |
| 10. | सैटे. प्रशिक्षण केन्द्र भरतपुर | मु.व.सं. भरतपुर |
| 11. | सैटे. प्रशिक्षण केन्द्र सरिस्का (अलवर) | अति. प्र.मु.व.सं. (एम.एण्ड ई.) जयपुर |

## परीक्षा परिणाम एवं पुरस्कार वितरण

वन रक्षक प्रशिक्षण सत्र की समाप्ति पर सभी प्रशिक्षण केन्द्रों पर दिनांक 13.01.2014 को समापन समारोह का आयोजन किया गया। एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति की उपस्थिति में दीक्षान्त समारोहों का आयोजन सभी केन्द्रों पर किया गया। इस अवसर पर परीक्षा परिणामों की घोषणा की गई तथा विभिन्न विषयों एवं अन्य गतिविधियों में विशेष योग्यता प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार वितरित किए गए जिनका समेकित विवरण इस प्रकार है।

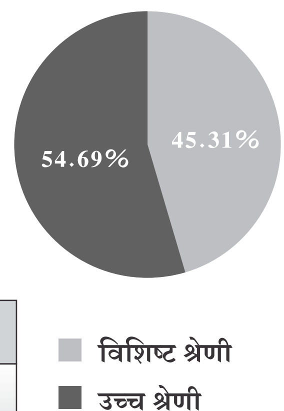


| क्र.सं. | प्रशिक्षणार्थी | विशिष्ट श्रेणी संख्या | उच्च श्रेणी | निम्न श्रेणी | योग |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | पुरुष | 222 | 275 | – | 497 |
| 2. | महिला | 63 | 69 | – | 132 |
| 3. | योग | 285 | 344 | – | 629 |
| 4. | प्रतिशत | 45.31 | 54.69 | – | 100 |

**निम्न विषयों में प्रशिक्षणार्थियों को प्रत्येक केन्द्र पर पृथक्–पृथक् पुरस्कृत किया गया –**

## शैक्षणिक

1. योग्यता क्रम में प्रथम स्थान
2. सत्र का सर्वोत्तम वन रक्षक
3. वन सुरक्षा एवं कानून में सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ता
4. वन लेखा एवं राज. सेवा नियम में सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ता
5. क्षेत्र वनस्पति विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ता
6. वनवर्धन प्रबोधन एवं मूल्यांकन में सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ता
7. साझा वन प्रबन्ध में सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ता
8. वन्य जीव प्रबन्ध में सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ता
9. वन उपयोग में सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ता
10. वन सर्वेक्षण, वनमिति एवं वन अभियांत्रिकी में सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ता

## खेलकूद एवं अन्य विशेष गतिविधियाँ

1. सत्र का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी।
2. जूडो-कराटे में सर्वश्रेष्ठ वन रक्षक
3. मैराथन में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाला वन रक्षक
4. योगासन में सर्वश्रेष्ठ वनरक्षक
5. 100 मी., 200 मीटर, 400 मीटर में प्रथम/द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाला वन रक्षक
6. गोला फेंक जेवेलियन थ्रो प्रथम/द्वितीय स्थान
7. वॉलीबाल प्रतियोगिता में प्रथम

उपर्युक्तानुसार सभी 13 केन्द्रों पर प्रत्येक प्रकार के 17-17 पुरस्कार प्रदान किए गए।

उ. व. सं.,बांसवाड़ा द्वारा खेल गतिविधियों का निरीक्षण।

जोधपुर प्रशिक्षण केन्द्र पर महिला प्रशिक्षणार्थियों की दौड

सरिस्का प्रशिक्षण केन्द्र पर पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की दौड

फील्ड में क्लास

वृक्षारोपण का अध्ययन करते हुए प्रशिक्षणार्थी

## à^md _ë`mH$Z / Impact Assessment

नव नियुक्त वन रक्षकों को प्रशिक्षण के लिए विभाग द्वारा निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए ही विशिष्ट पाठ्यक्रम व इतर पाठ्यक्रम गतिविधियाँ निर्धारित की गई हैं। विभाग के अनुभवी अधिकारी व कर्मचारी ही अध्यापन कार्य करते हैं तथापि जैसा कि बताया जा चुका है आवश्यकतानुसार बाहरी प्रशिक्षकों को भी आमंत्रित किया जाता है।

सत्रान्त में प्रशिक्षणार्थियों को एक पृष्ठ पोषण प्रपत्र भी उपलब्ध कराया गया जिसके अनुसार सभी प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण को उत्कृष्ट अथवा बहुत अच्छा माना। विभागीय व इत्तर विभागीय प्रशिक्षकों के अध्यापन को भी श्रेष्ठ समझा गया। विभागीय दृष्टिकोण से प्रशिक्षण का परिणाम सकारात्मक रहा। इस प्रशिक्षण सत्र में प्रशिक्षण के प्रभाव का मूल्यांकन प्रशिक्षणार्थियों के दृष्टिकोण से भी किया गया।

**प्रश्नः – प्रशिक्षण में सर्वाधिक उपयोगी भाग कौनसा लगा?**

इस प्रश्न के उत्तर में प्रशिक्षणार्थियों से प्राप्त उत्तर इस प्रकार हैः–

- प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान भ्रमण का कार्यक्रम सर्वश्रेष्ठ उपयोगी रहा। अधिकतर प्रशिक्षणार्थियों ने फील्ड में व्यवहारिक ज्ञान प्राप्ति को उपयोगी माना।
- कतिपय प्रशिक्षणार्थियों ने ग्राम्य वन सुरक्षा एवं प्रबन्ध समितियों से हुए ''इन्टरएक्शन'' तथा उनके द्वारा कराए गए कार्यों के अवलोकन को उपयोगी पाया।
- प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण कार्य की संरचना, संगठन व वातावरण को भी उपयोगी माना।
- कुछ प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण के दौरान हुए स्थानीय वनस्पति के ज्ञान को सर्वाधिक अच्छा माना।
- कतिपय प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षक के साथ विचार विमर्श व अध्ययन की सुविधा को सर्वाधिक उपयोगी माना।

**प्रश्नः – प्रशिक्षण से क्या सीखा?**

प्रशिक्षणार्थियों से खुले प्रश्न के रूप से इस प्रश्न का उत्तर चाहा गया था। प्रशिक्षणार्थियों ने निम्न बातें सीखना स्वीकार किया–

- अनुशासन के प्रति जागरूकता
- आचार व्यवहार में विनयशीलता
- समय का महत्त्व एवं सदुपयोग
- नियमित दिनचर्या में सुधार
- जल्दी उठकर दौड़ लगाना व व्यायाम करना
- स्वतन्त्र विचार विमर्श की क्षमता में वृद्धि।
- पद का मान सम्मान एवं गरिमा बनाए रखना

**प्रश्नः – प्रशिक्षण के दौरान महत्त्वपूर्ण गतिविधि, यदि कोई हो?**

इस प्रश्न के उत्तर में प्रशिक्षणार्थियों से अपेक्षित था कि वे ऐसी सूचनाएं दें जिन कार्यों को करने पर उन्हें सन्तोष का अनुभव हुआ है। प्रश्न के उत्तर में निम्न प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुईं :–

- अतिक्रमण प्रभावी क्षेत्रों की गश्त व अतिक्रमण हटाने की प्रक्रिया।
- जी.पी.एस. प्रशिक्षण का वानिकी कार्यों में उपयोग।
- शैक्षणिक भ्रमण दौरान प्रशिक्षणार्थियों की सामूहिक भागीदारी।
- नियमित योग एवं मेडिटेशन की महत्ता।

**प्रशिक्षण केन्द्र अलवर में सर्वे का प्रशिक्षण**

- महत्त्वपूर्ण वन एवं पर्यावरणीय दिवसों पर पदयात्रा का अनुभव

**प्रश्नः – प्रशिक्षण के दौरान उन्हें क्या अभाव प्रतीत हुए?**

इस प्रश्न के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया जाना था कि गत वर्षों में जो परिवर्तन वन प्रबन्ध में हुए हैं तथा नई पीढ़ी जो अत्यधिक शैक्षणिक पृष्ठभूमि वाली है, क्या अनुभव कर रही है तथा उनके दृष्टिकोण से प्रशिक्षण में क्या नवीन जोड़ा जाना चाहिए। इस प्रश्न के जवाब में बड़ी संख्या में उत्तर प्राप्त हुए जो इस प्रकार हैंः –

- प्रशिक्षण में कम्प्यूटर विषय को सम्मिलित किया जाये।
- कार्यालय सम्बन्धी दस्तावेजों को स्वयं भरना सिखाया जाए।
- महिला प्रशिक्षक की भी व्यवस्था हो।
- महिलाओं के लिए हॉस्टल वार्डन महिला ही नियुक्त की जाए।
- राज्य स्तरीय समारोह की परेड में भेजा जाए (गणतन्त्र व स्वतंत्रता दिवस)।
- प्रशिक्षण में वाहन चालन और तैराकी भी जोड़े जाएं।
- आत्मरक्षा उपाय सिखाने वाली कक्षाएं बढ़ाई जाए।
- हॉस्टल में प्रशिक्षणार्थियों से मिलने आने वाले परिजनों से वार्ता करने के लिए पृथक् व्यवस्था हो।
- चिकित्सक की सुविधाएं परिसर में ही उपलब्ध कराई जाए।
- अध्ययन को प्रभावी व आकर्षक बनाने के लिए प्रोजेक्टर आदि की व्यवस्थाएं की जाएं।
- क्षेत्र प्रशिक्षण अवधि बढ़ायी जाए।
- प्रशिक्षणार्थियों के लिए स्वच्छ आवास व्यवस्था की जानी चाहिए।
- प्रशिक्षण में शिष्टाचार एवं लोक व्यवहार प्रशिक्षण सम्मिलित किया जाना चाहिए।
- पाक शाला की गुणवत्ता व व्यवस्था में सुधार अपेक्षित है।
- सभी पुस्तकें उपलब्ध कराई जाएं ताकि वन विषयक कानूनों का अनुभव प्राप्त किया जा सके।

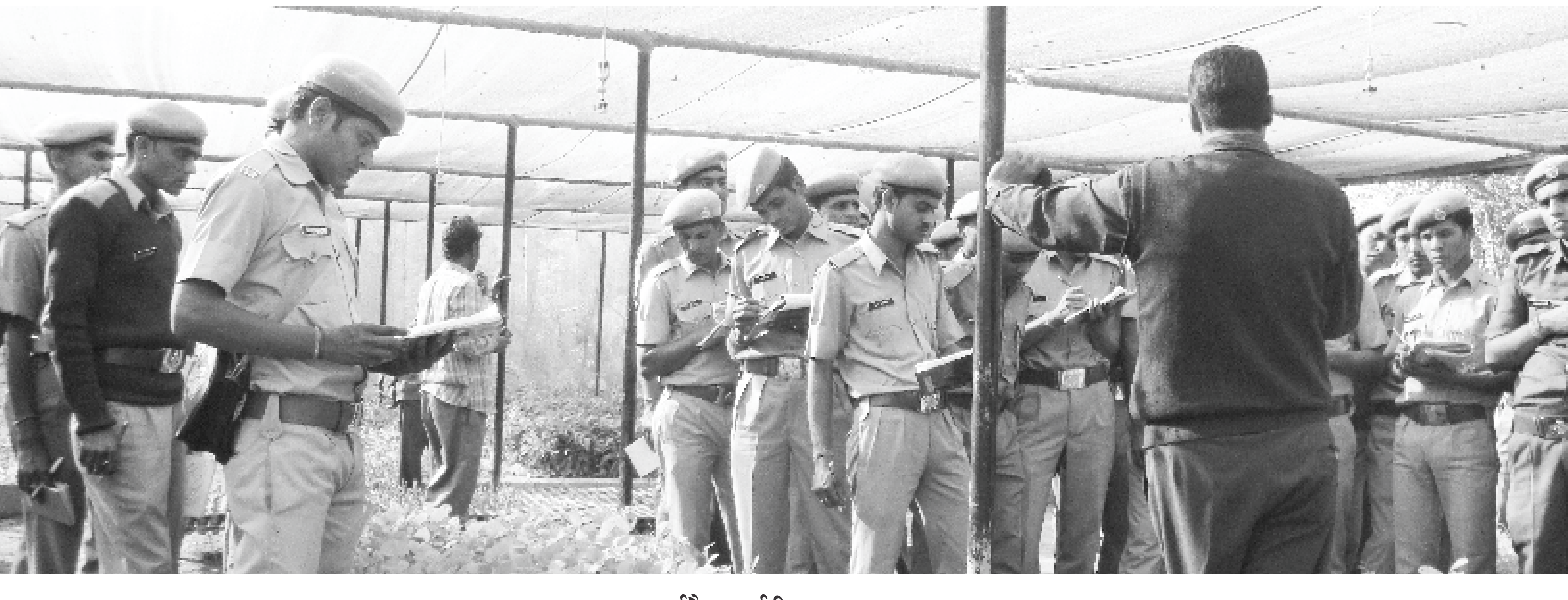

**हाईटैक नर्सरी का अध्ययन**

प्रशिक्षणार्थी ईको ट्यूरिज्म की जानकारी लेते हुए।

**उपसंहारः–** उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि वर्ष 2010–11 में दिए गए आधारभूत प्रशिक्षण की भांति वर्ष 2013 में 629 नवनियुक्त वनरक्षकों को 13 विभिन्न प्रशिक्षण केन्द्रो पर 3 माह का प्रशिक्षण प्रदान कर प्रमाण पत्र वितरित किए गए। इनमें से 45.31 प्रतिशत प्रशिक्षार्थियों ने विशेष श्रेणी में तथा 54.69 प्रतिशत प्रशिक्षार्थियों ने उच्च श्रेणी में प्रशिक्षण प्राप्त किया। उल्लेखनीय है कि निम्न श्रेणी में कोई भी प्रशिक्षाणार्थी उत्तीर्ण नहीं हुआ।

जहाँ तक प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षणिक पृष्ठभूमि का प्रश्न है, यह रेखांकित करना आवश्यक है कि सर्वाधिक 256 प्रशिक्षणार्थी शिक्षा स्नातक (B.Ed.) तथा 25 बी.एस.टी.सी. उत्तीर्ण थे अर्थात् कुल प्रशिक्षणार्थियों में से 39.84 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थी शिक्षा का व्यवसायिक प्रशिक्षण प्राप्त रहे हैं। न्यूनतम योग्यताधारी तो मात्र 6.04 प्रतिशत ही रहे जबकि अन्य योग्यताधारी प्रशिक्षणार्थियों में आई.टी.आई, बी.पी.एड., एम.फिल., एलएल.बी. एवं कम्प्यूटर डिप्लोमा की पृष्ठभूमि से पाए गए।

इन प्रशिक्षणार्थियों को तीन माह की अवधि में 96 कालांश सैद्धान्तिक अध्ययन, 64 कालांश प्रायोगिक अध्ययन, 128 घण्टे क्षेत्र अभ्यास तथा 10 दिवस का प्रशिक्षण भ्रमण करवाया गया। प्रशिक्षणार्थियों को पर्वतारोहण, पेडो पर चढ़ना, कुओं में उतरना, प्रशिक्षणार्थियों का आपस में ''इन्टरएक्शन'', फ्लैग मार्च, जड़ी–बूटी प्रशिक्षण, क्विज कम्पीटीशन, प्राथमिक चिकित्सा आदि ऐसी ही अन्य गतिविधियाँ हैं जिन्हें भविष्य में प्रशिक्षण का महत्त्वपूर्ण अंग बनाया जाएगा। इसी प्रकार प्रशिक्षणार्थियों के मानसिक विकास के लिए योग, आर्ट ऑफ लिविंग, पतंजलि योग प्रशिक्षण केन्द्र वि.वि. द्वारा स्वस्थ व चुस्त रहने के उपाय भी सिखाए गए।

**निष्कर्षतः भर्ती हुए वनरक्षकों को एक साथ प्रशिक्षण देने का ये अनूठा व अभिनव प्रयोग पूर्णतया सफल रहा व विभाग को मात्र तीन माह में कुशल प्रशिक्षित कर्मचारी प्राप्त हुए। यदि इन्हीं वनरक्षकों को परम्परागत पद्धति से स्थाई केन्द्रों पर प्रशिक्षित किया जाता तो सम्भवतः 5 वर्ष का समय लग जाता। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में सभी केन्द्रों पर एक समान व एक ही पाठ्यक्रम से प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षणार्थियों के लिए हथियार चलाने, जूडो–कराटे, लाठी चलाने के प्रशिक्षण के साथ–साथ ही व्यायाम, योग व खेलकूद गतिविधियां भी आयोजित कराई गई। सभी प्रशिक्षण केन्द्रो पर प्रशिक्षण एक ही दिन शुरू कर एक ही दिन समाप्त किया गया। प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रशिक्षण में अनेक नवीन विषय जोड़ने के जो सुझाव प्राप्त हुए हैं उन्हें भी शीघ्र अमल में लाया जाएगा।**

## कक्षा कक्ष में प्रशिक्षण

बीकानेर

बीकानेर

कोटा

अजमेर

रणथम्भौर

# झलकियां

## उद्घाटन समारोह

कोटा

बून्दी

## समापन समारोह

उदयपुर

अलवर

बीकानेर

अजमेर

# राज्य के स्थाई एवं सैटेलाइट वन प्रशिक्षण केन्द्र

■ स्थाई प्रशिक्षण केन्द्र
● सैटेलाइट प्रशिक्षण केन्द्र

वन विभाग, राजस्थान के लिए अति. प्रधान मुख्य वन संरक्षक (प्रशिक्षण एवं अनुसंधान), राजस्थान जयपुर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित। निर्देशन : पी. के. मेरकप,
मुद्रक : पॉपुलर प्रिन्टर्स, जयपुर, फरवरी, 2014/ 250 प्रतियां